



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

समाज
विकास
पर्यावरण
मुल्य
महिला
समायान
राजनीति
संस्कृति
शिक्षा
युवा

रचनाकार :-

वन्दना सिंह

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - वन्दना सिंह

अपराध और बढ़ती असुरक्षा : जब सामाजिक समस्या व्यक्तिगत बन जाती है



अपराध और बढ़ती असुरक्षा : जब सामाजिक समस्या व्यक्तिगत बन जाती है

सुबह की चाय के साथ अखबार पढ़ना हमारे जीवन की एक सामान्य आदत है। देश-दुनिया की खबरों के बीच जब किसी अपराध की खबर सामने आती है, तो हम उसे पढ़ते हैं, कुछ क्षण दुखी होते हैं और फिर अगले पन्ने पर चले जाते हैं। लेकिन कुछ खबरें ऐसी होती हैं जो अखबार के पन्ने के साथ खत्म नहीं होतीं। वे मन में कहीं अटक जाती हैं और बार-बार एक सवाल करती हैं—अगर इस खबर में पीड़ित कोई अनजान व्यक्ति नहीं, मेरा अपना बच्चा होता तो?

शायद उस समय वही खबर, जिसे पढ़कर हमने कुछ क्षण दुःख व्यक्त किया था, हमारे जीवन की सबसे बड़ी चिंता बन जाती।

एक माँ के लिए यह सवाल और भी गहरा है। जब बच्चा पहली बार अकेले स्कूल जाता है, तो माँ दरवाजे पर खड़ी होकर उसे तब तक देखती रहती है, जब तक वह आँखों से ओझल न हो जाए। बच्चा सुरक्षित पहुँच जाए, इसका इंतजार केवल कुछ मिनटों का होता है, लेकिन उन मिनटों में मन न जाने कितनी आशंकाओं से गुजरता है। यही चिंता तब और बढ़ जाती है जब समाज में अपराध और असुरक्षा की खबरें लगातार सामने आती रहें।

एक शिक्षक की चिंता भी इससे अलग नहीं होती। कक्षा में बैठे बच्चे केवल रोल नंबर नहीं होते। उनके चेहरे पहचाने जाते हैं, उनकी आवाजें पहचानी जाती हैं। कौन-सा बच्चा किस बात पर खुश होता है और कौन-सा बच्चा अचानक चुप रहने लगा है—धीरे-धीरे शिक्षक इन छोटी-छोटी बातों को समझने लगता है। इसलिए जब किसी विद्यार्थी के साथ कोई अप्रिय घटना होती है, तो वह खबर केवल खबर नहीं रह जाती।

यहीं से किसी सामाजिक समस्या का व्यक्तिगत समस्या में बदल जाना शुरू होता है।

आज हमारे सामने अनेक गंभीर समस्याएँ हैं—बेरोजगारी, नशे की बढ़ती प्रवृत्ति, मानसिक तनाव, प्रदूषण, सामाजिक असमानता, साइबर अपराध और आर्थिक दबाव। हर समस्या अपने स्थान पर महत्वपूर्ण है। लेकिन अपराध से पैदा होने वाली असुरक्षा का असर कुछ अलग होता है। अपराध केवल किसी व्यक्ति की संपत्ति नहीं छीनता; कई बार वह उसके भीतर का विश्वास भी छीन लेता है।

जिस व्यक्ति के साथ अपराध होता है, उसके साथ-साथ उसका परिवार भी उस घटना को जीता है। घर के लोगों की दिनचर्या बदल जाती है, व्यवहार बदल जाता है और कई बार सोचने का तरीका भी बदल जाता है।

किसी घटना के बाद माता-पिता अपने बच्चे को अकेले भेजने से डरने लगते हैं। बेटी के देर से घर लौटने पर फोन बार-बार देखा जाता है। बुजुर्ग रात में दरवाजा खोलने से पहले कई बार सोचते हैं। बच्चे, जो कल तक बिना किसी चिंता के बाहर खेलते थे, अचानक कहने लगते हैं—“मैं अकेला नहीं जाऊँगा।”

यह केवल डर नहीं है। यह उस विश्वास का कमजोर पड़ना है जिसके सहारे हम सामान्य जीवन जीते हैं।

“अपराध केवल एक घटना नहीं, कई बार विश्वास टूटने की शुरुआत होता है।”

हम अपराध को अक्सर हत्या, डकैती, अपहरण या बड़ी ठगी जैसी घटनाओं से जोड़कर देखते हैं। लेकिन अपराध की शुरुआत हमेशा इतनी बड़ी नहीं होती। कई बार वह किसी छोटी-सी हरकत से शुरू होता है—किसी लड़की पर बार-बार टिप्पणी करना, उसका पीछा करना, अनचाहे संदेश भेजना, किसी की तस्वीर बिना अनुमति लेना, किसी विद्यार्थी को लगातार परेशान करना या इंटरनेट पर किसी का मजाक उड़ाना।

हम ऐसे अवसरों पर बहुत आसानी से कह देते हैं—“अरे, इतनी-सी बात है, जाने दो।”

लेकिन प्रश्न यह है कि जो बात पीड़ित के लिए परेशानी है, वह हमारे लिए “इतनी-सी बात” कैसे हो सकती है?

हर गलत व्यवहार अपराध नहीं बनता, लेकिन हर गलत व्यवहार को सामान्य मान लेना अपराधी मानसिकता को बढ़ावा दे सकता है।

यहीं समाज की पहली जिम्मेदारी शुरू होती है।

“गलत को समय पर रोकना, बड़े अपराध के बाद पछताने से बेहतर है।”

यदि किसी बच्चे को स्कूल में लगातार चिढ़ाया जा रहा है और हम इसे बच्चों की सामान्य शरारत कहकर टाल देते हैं, यदि किसी लड़की का कोई व्यक्ति बार-बार पीछा कर रहा है और हम इसे मजाक समझ लेते हैं, यदि सोशल मीडिया पर किसी की निजी तस्वीर का दुरुपयोग हो रहा है और हम कहते हैं कि “इंटरनेट पर तो ऐसा होता ही है”, तो हम जाने-अनजाने गलत व्यवहार को जगह दे रहे होते हैं।

हमें हर घटना को बढ़ा-चढ़ाकर देखने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन हर असहज संकेत को पूरी तरह अनदेखा करना भी सही नहीं।

कबीर का प्रसिद्ध दोहा है—

“बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥”

इस दोहे का अर्थ केवल दूसरों की गलतियाँ न देखने तक सीमित नहीं है। हमें अपने व्यवहार को भी देखना होगा। क्या हम किसी का मजाक उड़ाते समय सोचते हैं कि सामने वाला कैसा महसूस कर रहा होगा? क्या हम किसी की निजी बात किसी तीसरे व्यक्ति को बताते समय उसकी अनुमति के बारे में सोचते हैं? क्या हम सोशल मीडिया पर कोई टिप्पणी लिखने से पहले यह विचार करते हैं कि वही शब्द यदि हमारे लिए लिखे जाएँ तो हमें कैसा लगेगा?

यही छोटे-छोटे सवाल हमारी सामाजिक संवेदनशीलता को परखते हैं।

घर से शुरू होती सुरक्षा

बच्चे को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी केवल स्कूल, पुलिस या सरकार की नहीं है। परिवार उसकी पहली सुरक्षा-दीवार है। लेकिन सुरक्षा का अर्थ केवल यह जानना नहीं कि बच्चा कहाँ जा रहा है और कब लौटेगा। सुरक्षा का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है—संवाद।

जिस बच्चे को अपने माता-पिता से बात करने में डर लगता है, वह परेशानी होने पर भी चुप रह सकता है। कई बच्चे इसलिए अपनी समस्या नहीं बताते क्योंकि उन्हें लगता है कि माता-पिता उन्हें ही दोष देंगे।

“तुम वहाँ गए ही क्यों?”

“तुमने पहले क्यों नहीं बताया?”

“हमने तुम्हें मना किया था।”

ऐसी बातें घटना के बाद बच्चे के मन में और अपराधबोध भर सकती हैं।

इसलिए माता-पिता को बच्चों को यह भरोसा देना चाहिए कि यदि कभी उनके साथ कुछ गलत हो जाए तो सबसे पहले वे घर आकर अपनी बात कह सकते हैं। कभी-कभी बच्चे को समाधान से पहले एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत होती है जो बिना टोके उसकी बात सुन ले।

बच्चों से केवल पढ़ाई और अंक की बात करने के बजाय कभी-कभी यह भी पूछना चाहिए—“आज स्कूल में तुम्हारा दिन कैसा रहा?” और फिर उत्तर सुनने के लिए वास्तव में समय भी देना चाहिए।

बच्चों को व्यक्तिगत सीमाओं के बारे में समझाना भी जरूरी है। उन्हें पता होना चाहिए कि उनका शरीर, उनकी निजी जानकारी और उनकी भावनाएँ महत्वपूर्ण हैं। किसी को बिना अनुमति छूना, तस्वीर लेना या निजी बात साझा करना गलत है।

यह शिक्षा डर पैदा करने के लिए नहीं, आत्मविश्वास पैदा करने के लिए होनी चाहिए।

बच्चे को यह महसूस होना चाहिए कि यदि कभी कोई स्थिति उसे असहज करे तो “नहीं” कहना गलत नहीं है और सहायता माँगना कमजोरी नहीं है।

“जिस बच्चे को अपनी बात कहने का साहस मिलता है, वह खतरे के सामने अकेला नहीं रहता।”

हम अपनी बेटियों को बचपन से सुरक्षा के अनेक पाठ पढ़ाते हैं। यह आवश्यक है, लेकिन इसके साथ हमें अपने बेटों की परवरिश में भी उतनी ही गंभीरता रखनी होगी।

बेटियों से कहना कि सावधान रहो आसान है। बेटों को यह सिखाना कि किसी दूसरे की सीमा का सम्मान करो, कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

हमारे बेटों को यह पता होना चाहिए कि किसी लड़की का पीछा करना प्रेम नहीं है, उसकी तस्वीर बिना अनुमति लेना मजाक नहीं है, उसकी चुप्पी सहमति नहीं है और किसी की असहजता मनोरंजन नहीं है।

बेटियों को डर से नहीं, बेटों को संस्कार और संवेदनशीलता से सुरक्षित समाज बनाया जा सकता है।

यह बात केवल महिलाओं के संदर्भ में नहीं है। किसी भी व्यक्ति की गरिमा और व्यक्तिगत सीमा का सम्मान होना चाहिए।

विद्यालय की भूमिका

विद्यालय केवल पाठ्यक्रम पूरा करने की जगह नहीं है। वह बच्चे के व्यक्तित्व के निर्माण का महत्वपूर्ण स्थान है। बच्चे परिवार के बाद सबसे अधिक समय विद्यालय में बिताते हैं। इसलिए विद्यालय में सुरक्षा का अर्थ केवल गेट पर सुरक्षा-कर्मियों या सीसीटीवी कैमरे होना नहीं है। सुरक्षा का अर्थ ऐसा वातावरण भी है जहाँ बच्चा अपनी परेशानी बिना डर के बता सके।

एक शिक्षक बच्चों के व्यवहार में आए छोटे बदलावों को पहचान सकता है। जो बच्चा पहले बहुत बात करता था, अचानक शांत हो जाए; जो हमेशा मित्रों के बीच रहता था, अकेला रहने लगे; पढ़ाई में रुचि अचानक कम हो जाए या किसी विशेष व्यक्ति के सामने असहज दिखाई दे—तो इन संकेतों को समझने की कोशिश की जानी चाहिए।

हर बदलाव किसी अपराध का प्रमाण नहीं होता। बच्चे कई कारणों से परेशान हो सकते हैं। लेकिन संवेदनशील शिक्षक उस बच्चे को तुरंत “ध्यान नहीं देता”, “शरारती है” या “अनुशासनहीन है” कहकर आगे नहीं बढ़ता।

कभी-कभी एक शिक्षक की कुछ मिनट की बातचीत किसी बच्चे को बहुत बड़ा सहारा दे सकती है।

विद्यालय में बच्चों को सुरक्षा, डिजिटल व्यवहार, व्यक्तिगत सीमाएँ और शिकायत करने के उचित माध्यमों की जानकारी दी जानी चाहिए। उन्हें यह विश्वास भी होना चाहिए कि शिकायत करने पर उनका मजाक नहीं बनाया जाएगा।

किसी बच्चे की शिकायत को केवल इसलिए टाल देना कि “बच्चे तो आपस में लड़ते रहते हैं”, आगे चलकर बड़ी समस्या बन सकता है।

विद्यालय में अनुशासन जरूरी है, लेकिन अनुशासन का अर्थ केवल दंड नहीं होना चाहिए। अनुशासन का उद्देश्य बच्चे को डराना नहीं, जिम्मेदार बनाना होना चाहिए।

“जहाँ बच्चे बिना डर अपनी बात कह सकें, वहाँ सुरक्षा की पहली नींव मजबूत होती है।”

अपराध का बदलता चेहरा

तकनीक ने जीवन को बहुत आसान बनाया है। आज हम घर बैठे बैंकिंग कर सकते हैं, पढ़ाई कर सकते हैं, दूर बैठे लोगों से बात कर सकते हैं और दुनिया की जानकारी कुछ सेकंड में प्राप्त कर सकते हैं।

लेकिन इसी सुविधा के साथ अपराध के नए रास्ते भी खुले हैं।

आज किसी व्यक्ति को ठगने के लिए अपराधी का सामने आना जरूरी नहीं। एक फोन कॉल, एक संदेश या एक लिंक पर्याप्त हो सकता है। कभी बैंक अधिकारी बनकर फोन किया जाता है, कभी किसी रिश्तेदार की आवाज की नकल करके मदद माँगी जाती है, कभी नौकरी का झाँसा दिया जाता है और कभी पुरस्कार का लालच।

इन घटनाओं में सबसे दुखद बात यह है कि पीड़ित व्यक्ति केवल आर्थिक नुकसान नहीं झेलता; उसे कई बार शर्म भी महसूस होती है कि वह ठगी का शिकार कैसे हो गया।

हमें ऐसे व्यक्ति का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। गलती किसी से भी हो सकती है।

साइबर अपराध के खिलाफ सबसे बड़ा हथियार जागरूकता है।

बच्चों और युवाओं को यह समझना होगा कि इंटरनेट पर हर व्यक्ति वैसा नहीं होता जैसा वह दिखाई देता है। फर्जी प्रोफाइल, नकली पहचान और झूठी जानकारी के पीछे कोई भी व्यक्ति छिपा हो सकता है।

निजी तस्वीरें, फोन नंबर, पता, स्कूल की जानकारी, पासवर्ड और अन्य व्यक्तिगत विवरण सोच-समझकर ही साझा किए जाने चाहिए।

“ऑनलाइन दुनिया में सावधानी की एक क्लिक, परेशानी के हजार कदम बचा सकती है।”

सोशल मीडिया ने हमारी आवाज को बहुत दूर तक पहुँचा दिया है। लेकिन आवाज जितनी दूर जाती है, जिम्मेदारी भी उतनी ही बढ़ती है।

किसी की फोटो पर भद्दी टिप्पणी करना, किसी व्यक्ति को ट्रोल करना या उसकी निजी बात सार्वजनिक करना केवल कुछ शब्द लिख देना नहीं है। सामने वाला व्यक्ति उन शब्दों के साथ जीता है।

कभी-कभी हम हँसते हुए लिख देते हैं—“अरे, मजाक था।”

लेकिन मजाक वही है जिसमें दोनों हँसें।

यदि एक व्यक्ति हँस रहा है और दूसरा भीतर से टूट रहा है, तो उसे मजाक कहना संवेदनहीनता है।

“जिस हँसी में किसी की पीड़ा छिपी हो, वह मनोरंजन नहीं, संवेदनहीनता है।”

अपराध के पीछे की परिस्थितियाँ

अपराध के पीछे एक ही कारण नहीं होता। गलत संगति, नशा, आर्थिक तनाव, पारिवारिक कलह, हिंसक वातावरण, बेरोजगारी और अवसरों की कमी व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। लेकिन इन परिस्थितियों को अपराध का बहाना नहीं बनाया जा सकता।

कठिन जीवन जीने वाले लाखों लोग ईमानदारी से संघर्ष करते हैं। इसलिए गरीबी या परेशानी को अपराध से जोड़ देना उचित नहीं। फिर भी यदि हम अपराध कम करना चाहते हैं, तो उन परिस्थितियों पर काम करना होगा जो कुछ लोगों को गलत रास्ते की ओर धकेल सकती हैं।

नशे की समस्या इसका एक उदाहरण है। नशा केवल व्यक्ति के शरीर को नुकसान नहीं पहुँचाता। वह परिवार की आर्थिक स्थिति, रिश्तों और बच्चों के भविष्य को भी प्रभावित कर सकता है।

इसलिए नशे के खिलाफ केवल दंड नहीं, रोकथाम और पुनर्वास भी जरूरी है।

युवाओं के पास सकारात्मक अवसर होना भी महत्वपूर्ण है। खेल, कला, संगीत, साहित्य, कौशल विकास और सामाजिक कार्य उन्हें अपनी ऊर्जा सही दिशा में लगाने का अवसर देते हैं।

हम अक्सर युवाओं से कहते हैं—“गलत काम मत करो।”

लेकिन हमें यह भी पूछना चाहिए—“सही काम करने के लिए हमने उन्हें कितने अवसर दिए?”

एक समाज केवल प्रतिबंध लगाकर युवाओं को सुरक्षित नहीं रख सकता। उसे उन्हें उद्देश्य भी देना होगा।

न्याय और पीड़ित की गरिमा

जब अपराध होता है तो समाज में स्वाभाविक रूप से आक्रोश पैदा होता है। लोग कठोर दंड की मांग करते हैं। गंभीर अपराधों में कठोर दंड का महत्व है, लेकिन न्याय का अर्थ केवल सजा नहीं है।

न्याय का अर्थ यह भी है कि पीड़ित की बात सुनी जाए, उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार हो और उसे बार-बार अपनी पीड़ा साबित करने के लिए मजबूर न होना पड़े।

कई बार घटना से ज्यादा कठिन होता है घटना के बाद का समय।

लोग सवाल पूछते हैं। रिश्तेदार चर्चा करते हैं। सोशल मीडिया पर बातें फैलती हैं। पीड़ित परिवार को बार-बार वही घटना याद करनी पड़ती है।

ऐसे समय में समाज को संवेदनशील होना चाहिए।

“जिस घर पर दुख बीत रहा हो, वहाँ हमारी जिज्ञासा नहीं, हमारी संवेदना पहुँचनी चाहिए।”

किसी पीड़ित से ऐसे सवाल नहीं किए जाने चाहिए जिनसे उसे ही अपनी स्थिति के लिए दोषी महसूस हो।

अपराधी के अपराध की जिम्मेदारी अपराधी की है।

पुलिस, प्रशासन और नागरिक

कानून-व्यवस्था किसी भी सुरक्षित समाज की महत्वपूर्ण आधारशिला है। नागरिक को यह भरोसा होना चाहिए कि आवश्यकता पड़ने पर पुलिस उसकी सहायता करेगी और उसकी शिकायत को गंभीरता से लिया जाएगा।

कानून कितना भी कठोर हो, यदि लोगों को यह विश्वास न हो कि वह निष्पक्ष रूप से लागू होगा, तो सुरक्षा की भावना कमजोर पड़ जाती है।

“कानून का भय तभी प्रभावी होता है, जब न्याय पर विश्वास हो।”

सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा भी जरूरी है। अच्छी रोशनी, सुरक्षित परिवहन, सहायता की सुविधा, संवेदनशील पुलिस व्यवस्था और त्वरित प्रतिक्रिया जैसी व्यवस्थाएँ अपराध की आशंका कम कर सकती हैं।

लेकिन हर जिम्मेदारी प्रशासन पर डाल देना भी उचित नहीं।

एक समाज में नागरिकों की भूमिका भी होती है।

यदि किसी सड़क पर लगातार कोई संदिग्ध गतिविधि हो रही है, यदि किसी बच्चे को बार-बार परेशान किया जा रहा है या किसी बुजुर्ग को धोखा दिया जा रहा है, तो इसे देखकर चुप रहना समाधान नहीं।

हाँ, सहायता करते समय समझदारी जरूरी है। किसी अपराधी से स्वयं भिड़ना हर व्यक्ति के लिए सुरक्षित नहीं। लेकिन सही व्यक्ति तक सूचना पहुँचाना, पीड़ित को सहायता देना और आवश्यक होने पर संबंधित संस्था से संपर्क करना हमारी जिम्मेदारी हो सकती है।

“हर व्यक्ति पुलिस नहीं बन सकता, लेकिन हर नागरिक संवेदनशील बन सकता है।”

समाज की चुप्पी

अपराध के बढ़ने के पीछे केवल अपराधी की मानसिकता नहीं, समाज की चुप्पी भी एक कारण बन सकती है।

हम अक्सर कहते हैं—

“मुझे क्या लेना-देना?”

“किसी के निजी मामले में क्यों पड़ें?”

“कल को परेशानी मेरे लिए खड़ी हो जाएगी।”

यह डर समझ में आता है। लेकिन यदि हर व्यक्ति यही सोचने लगे तो पीड़ित अकेला पड़ जाएगा।

सही तरीके से मदद करना ही पर्याप्त है। यदि हम स्वयं सुरक्षित रहते हुए किसी जिम्मेदार व्यक्ति या संस्था को सूचना दे सकते हैं, तो ऐसा करना चाहिए।

किसी बच्चे को परेशान होते देखकर शिक्षक को बताना, किसी महिला की परेशानी देखकर सुरक्षा कर्मी को सूचना देना या किसी बुजुर्ग को ऑनलाइन ठगी से बचाना—ये छोटी बातें हैं, लेकिन समाज में भरोसा पैदा करती हैं।

“चुप्पी हमेशा शांति नहीं होती; कई बार वह अन्याय को बढ़ने का अवसर देती है।”

लेकिन हमें दूसरी अतिशयोक्ति से भी बचना होगा। हर अनजान व्यक्ति को अपराधी समझना भी स्वस्थ समाज की निशानी नहीं है।

बच्चों को सावधानी सिखाएँ, लेकिन दुनिया से डरना नहीं।

महिलाओं को सुरक्षा दें, लेकिन उनकी स्वतंत्रता न छीनें।

युवाओं को दिशा दें, लेकिन हर समय उन पर संदेह न करें।

सुरक्षा का उद्देश्य जीवन को सीमित करना नहीं, जीवन को अधिक विश्वासपूर्ण बनाना है।

असुरक्षा का मन पर असर

अपराध की सबसे बड़ी क्षति हमेशा दिखाई नहीं देती।

टूटा हुआ दरवाजा दिखाई देता है, चोरी हुई वस्तु दिखाई देती है, चोट दिखाई देती है; लेकिन मन में बैठा डर दिखाई नहीं देता।

कई बार अपराध के बाद व्यक्ति सामान्य जीवन में लौटना चाहता है, लेकिन मन बार-बार उसे उसी घटना की ओर ले जाता है।

परिवार के लोग भी बदल जाते हैं।

माँ हर बार फोन करती है—“कहाँ पहुँचे?”

पिता देर से आने पर बेचैन होते हैं।

बेटी घर लौटते समय रास्ते की बार-बार जाँच करती है।

बुजुर्ग किसी अनजान कॉल को उठाने से डरते हैं।

यानी अपराध एक व्यक्ति के साथ घटता है, लेकिन उसका प्रभाव कई लोगों के जीवन में फैल जाता है।

इसीलिए असुरक्षा को केवल कानून-व्यवस्था के आँकड़े के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है।

हमें उस मानसिक बोझ को भी समझना होगा जो लोगों के साथ लंबे समय तक चलता है।

लेकिन इसका समाधान यह नहीं कि हम भय में जीना शुरू कर दें।

“सजग रहना समझदारी है, हर समय डरते रहना समाधान नहीं।”

हमें अपने बच्चों को भी यही संतुलन सिखाना होगा।

युवाओं से उम्मीद

आज के युवा तकनीक से जुड़े हैं, तेजी से सीखते हैं और बदलाव को स्वीकार करने की क्षमता रखते हैं। इसलिए अपराध और असुरक्षा के विरुद्ध सामाजिक जागरूकता में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है।

एक युवा यदि किसी गलत वीडियो को आगे भेजने से पहले सोचता है, किसी दोस्त के साथ हो रही बदसलूकी को मजाक कहकर टालता नहीं, किसी पीड़ित का मजाक नहीं उड़ाता या किसी गलत सूचना को सत्यापित किए बिना साझा नहीं करता, तो वह समाज को बेहतर बनाने में योगदान दे रहा है।

हमें युवाओं को केवल यह नहीं बताना कि “गलत मत करो।”

हमें उन्हें यह भी बताना होगा कि—

“सही के साथ खड़ा होना भी तुम्हारी जिम्मेदारी है।”

समाज की दिशा केवल कानून तय नहीं करता। नई पीढ़ी की सोच भी तय करती है।

क्या कठोर सजा ही पर्याप्त है?

जब कोई गंभीर अपराध सामने आता है, तो मन में स्वाभाविक रूप से गुस्सा आता है। लगता है कि अपराधी को कठोर से कठोर दंड मिलना चाहिए।

दंड आवश्यक है। लेकिन अपराध रोकने के लिए केवल दंड पर्याप्त नहीं।

यदि हम अपराध होने से पहले उसे रोकना चाहते हैं, तो हमें बच्चों की परवरिश, शिक्षा, डिजिटल जागरूकता, नशे पर नियंत्रण, सामाजिक संवेदनशीलता और प्रभावी कानून-व्यवस्था पर भी काम करना होगा।

“दंड अपराध के बाद आता है, संस्कार और जागरूकता अपराध से पहले।”

इसलिए एक सुरक्षित समाज को दोनों की जरूरत है—न्याय और जागरूकता।

हमें कैसा समाज बनाना है?

आखिर हम चाहते क्या हैं?

क्या ऐसा समाज जहाँ बच्चे शाम को बाहर खेलने से डरें?

जहाँ बेटी के देर से आने पर घर में घबराहट फैल जाए?

जहाँ बुजुर्ग अकेले बैंक जाने से डरें?

जहाँ हर ऑनलाइन संदेश संदेह पैदा करे?

या ऐसा समाज जहाँ सावधानी के साथ विश्वास भी हो?

निश्चित रूप से हमें दूसरा समाज चाहिए।

हमें ऐसा वातावरण चाहिए जहाँ बच्चा सुरक्षित होकर स्कूल जा सके, महिला बिना भय अपनी बात कह सके, बुजुर्ग सम्मान के साथ बाहर निकल सकें और युवा अपनी ऊर्जा सकारात्मक कार्यों में लगा सकें।

सुरक्षा का अर्थ केवल अपराध का अभाव नहीं है। सुरक्षा का अर्थ है—विश्वास।

बच्चे को माता-पिता पर विश्वास हो।

विद्यार्थी को शिक्षक पर विश्वास हो।

नागरिक को प्रशासन पर विश्वास हो।

पीड़ित को न्याय पर विश्वास हो।

और समाज को एक-दूसरे की संवेदनशीलता पर विश्वास हो।

यही वास्तविक सुरक्षा है।

महात्मा गांधी के विचारों में समाज के अंतिम व्यक्ति और कमजोर व्यक्ति के प्रति संवेदना का विशेष महत्व था। आज के संदर्भ में भी यह विचार प्रासंगिक है। किसी समाज की शक्ति केवल उसके मजबूत लोगों से नहीं आँकी जानी चाहिए; यह देखना चाहिए कि वहाँ कमजोर व्यक्ति कितना सुरक्षित है।

जिस समाज में कमजोर की आवाज सुनी जाती है, वह समाज वास्तव में मजबूत होता है।

बदलाव कहाँ से आएगा?

हम अक्सर कहते हैं—“समाज को बदलना चाहिए।”

लेकिन समाज हमसे अलग कोई चीज नहीं है।

हम ही समाज हैं।

हमारी भाषा समाज है।

हमारा व्यवहार समाज है।

हमारी चुप्पी समाज है।

हमारी आवाज भी समाज है।

इसलिए बदलाव किसी बड़े भाषण से नहीं, छोटे-छोटे व्यवहारों से शुरू होगा।

एक माँ अपने बच्चे से कहे—

“तुम्हें कोई बात परेशान करे तो मुझसे जरूर कहना।”

एक शिक्षक कहे—

“तुम्हारी बात सुनी जाएगी।”

एक पिता अपने बेटे से कहे—

“किसी की इच्छा और सम्मान का ध्यान रखना।”

एक मित्र अपने साथी से कहे—

“यह मजाक नहीं है, इससे सामने वाले को चोट पहुँच रही है।”

एक नागरिक किसी गलत घटना को देखकर उचित माध्यम से सहायता करे।

यही छोटी-छोटी बातें मिलकर बड़ी सामाजिक चेतना बनाती हैं।

एक दीपक पूरे अंधेरे को एक साथ समाप्त नहीं करता, लेकिन वह अपने आसपास का अंधेरा जरूर कम करता है।

समाज भी ऐसे ही बदलता है—एक व्यक्ति से, एक परिवार से, एक विद्यालय से।

इसलिए अपराध और असुरक्षा की समस्या पर विचार करते हुए सवाल केवल यह नहीं होना चाहिए—

“सरकार क्या कर रही है?”

सवाल यह भी होना चाहिए—

“मैं क्या कर रहा हूँ?”

यदि हम हर गलत व्यवहार देखकर आँखें फेर लेंगे, तो समस्या किसी दिन हमारे दरवाजे तक पहुँच सकती है।

लेकिन यदि हम समय रहते जागरूक होंगे, बच्चों से संवाद करेंगे, दूसरों की गरिमा का सम्मान करेंगे, गलत को मजाक कहकर नहीं टालेंगे और जरूरत पड़ने पर उचित तरीके से आवाज उठाएँगे, तो बदलाव की शुरुआत अवश्य होगी।

अंततः किसी समाज की वास्तविक प्रगति केवल उसकी ऊँची इमारतों, चौड़ी सड़कों, आधुनिक तकनीक या आर्थिक विकास से नहीं मापी जाती।

उसकी असली पहचान यह है कि वहाँ—

एक बच्चा कितना सुरक्षित महसूस करता है।

एक महिला कितनी स्वतंत्रता से चल सकती है।

एक बुजुर्ग कितने विश्वास से घर से बाहर निकल सकता है।

एक विद्यार्थी अपनी परेशानी कितनी सहजता से शिक्षक को बता सकता है।
और एक पीड़ित व्यक्ति कितनी उम्मीद के साथ सहायता माँग सकता है।
हमें ऐसा समाज नहीं चाहिए जहाँ लोग डर के कारण अपने घरों में बंद रहें।
हमें ऐसा समाज चाहिए जहाँ लोग सुरक्षा के कारण स्वतंत्र होकर जी सकें।
“डर से बंद दरवाजे समाज को सुरक्षित नहीं बनाते, विश्वास से खुले रास्ते बनते हैं।”
अपराध की हर खबर हमें दो बातें याद दिलाती है—पहली, खतरा केवल कहीं दूर नहीं है;
वह हमारे आसपास भी हो सकता है। दूसरी, हम पूरी तरह असहाय भी नहीं हैं।
हम अपनी सोच बदल सकते हैं।
हम अपने बच्चों को बेहतर संस्कार दे सकते हैं।
हम गलत व्यवहार को सामान्य मानने से इनकार कर सकते हैं।
हम पीड़ित के साथ खड़े हो सकते हैं।
हम डिजिटल दुनिया में जिम्मेदारी से व्यवहार कर सकते हैं।
हम कानून पर विश्वास रखते हुए अपने नागरिक कर्तव्य निभा सकते हैं।
और सबसे बढ़कर, हम दूसरे के दर्द को केवल “उसकी समस्या” मानकर आगे बढ़ने के
बजाय उसे मानवीय दृष्टि से देख सकते हैं।
किसी दूसरे की पीड़ा जब हमें अपनी पीड़ा जैसी महसूस होने लगेगी, तभी वास्तविक
संवेदना जन्म लेगी।
शायद तब अखबार में अपराध की खबर पढ़कर हम केवल कुछ क्षण दुखी होकर पन्ना
नहीं पलटेंगे। हम अपने भीतर एक सवाल लेकर उठेंगे—
“इस समाज को थोड़ा अधिक सुरक्षित बनाने के लिए मैं आज क्या कर सकता हूँ?”
क्योंकि किसी परिवार के लिए अपराध की घटना केवल एक तारीख नहीं होती। वह
उससे जुड़ी यादों, डर और सवालों के साथ लंबे समय तक जीवित रहती है।
बेहतर यही है कि हम किसी ऐसी खबर के अपने घर तक पहुँचने का इंतजार न करें।
आज ही अपने बच्चों से बात करें।
आज ही उनकी बात सुनें।
आज ही अपने व्यवहार को देखें।
आज ही गलत को “छोटी बात” कहकर टालने से इनकार करें।

आज ही यह तय करें कि किसी दूसरे की सुरक्षा और सम्मान हमारे लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना अपना।

क्योंकि सुरक्षा केवल पुलिस की जिम्मेदारी नहीं है।

न्याय केवल अदालत की जिम्मेदारी नहीं है।

बच्चों की सुरक्षा केवल माता-पिता की जिम्मेदारी नहीं है।

सुरक्षित समाज हम सबकी साझा जिम्मेदारी है।

और शायद इस पूरे प्रश्न का सबसे सरल उत्तर यही है—

“जागरूक रहें, संवेदनशील रहें, गलत को सामान्य न बनने दें।”

क्योंकि जिस दिन हम किसी अनजान व्यक्ति के दर्द को भी अपना दर्द समझने लगेंगे, उस दिन समाज में केवल कानून नहीं, इंसानियत भी मजबूत होगी।

और अंततः किसी भी सभ्य समाज की सबसे बड़ी पहचान यही है कि वहाँ लोग केवल अपने लिए सुरक्षित नहीं होते—वे एक-दूसरे की सुरक्षा का भी ध्यान रखते हैं।

“मानवता वहीं जीवित रहती है, जहाँ दूसरे का दर्द देखकर मन चुप नहीं रहता।”

यही सोच अपराध और बढ़ती असुरक्षा के विरुद्ध हमारी सबसे मजबूत शुरुआत हो सकती है।

- वन्दना सिंह



लेखक परिचय

नाम – वन्दना सिंह
हिन्दी शिक्षिका
सेठ एम. आर जयपुरिया स्कूल,
बाबतपुर, वाराणसी





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**वन्दना सिंह**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित “**एक लेख प्रतियोगिता**” में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

